SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मध्य एशिया की उथल पुथल और भारतीय हित

समीर भार्गव, (Ph.D.), सैन्य विज्ञान विभाग,
महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
समीर भार्गव, (Ph.D.), सैन्य विज्ञान विभाग,
महाराजा मानसिंह महाविद्यालय,
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/09/2021
Revised on : -----
Accepted on : 06/10/2021
Plagiarism : 01% on 29/09/2021

Plagiarism Checker X Originality Report

Similarity Found: 1%

Date: Wednesday, September 29, 2021
Statistics: 21 words Plagiarized / 2004 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Ek/; ,f'k;k dh mFky iqFky vkSj Hkkjrh; fgr bfrgkl esa e/; ,f'k;k js'ke ds ekxZ ds O;kikfjd vkSj lkaLd`frd egRo ds fy, izfl/n gSA ;gk; vf/kdka'kr% [kkuk cnks'k tkfr;ksa dk izHkko jgk gSA ;g {ks= mRRkj esa :l ls nf{k.k esa vQxkfuLRkku rd vkSj iwoZ esa phu ls if'pe esa dSfLi;y lkxj rd QSyk gqvk gSA HkwosRRkkvksa }kjk e/; ,f'k;k dh izR;sd ifjHkk'kk esa HkwriwoZ lksfo;r la?k ds ik;p ns'kksa dks Hkh mTkcsfdLRkku] dtkfdLRkku] rqdZesfuLRkku] fdfxZLRkku vkSj rkfdfdLRkku ges'kk fxuk tkrk gSaA1 'kfDr lap; ds lkekfjd ;qx esa e/; ,f'k;k

शोध सार

एशियाई देशो में जारी उथल–पुथल के मध्य भारत की चिंताओं पर इस शोध पत्र के माध्यम से प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। एशिया के अंतर्गत मध्य एशियाई क्षेत्र जो कि उत्तर में रूस से दक्षिण में अफगानिस्तान तक और पूर्व में चीन से पश्चिम में कैस्पियन सागर तक फैला हुआ है, भारत के लिए अति महत्वपूर्ण है। ईरान, अफगानिस्तान सहित सोवियत रूस से अलग हुए उजवेकिस्तान, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान, तालिमिस्तान से भारत हर मोर्चे पर संबंध सुधारने का प्रयास कर रहा है। ईरान और अफगानिस्तान में निकास परियोजनाओं पर भारत ने हजारो डॉलर खर्च किये हुए है। पाकिस्तान और चीन इस क्षेत्र में लगातार भारत विरोधी मार्च करते रहे है। अभी हाल ही में अफगानिस्तान में हुए सत्ता परिवर्तन से विश्व को सकते में डाल दिया है। यह क्षेत्र विश्व में मादक पदार्थो का गढ़ बनता रहा है। आतंकवाद एक बार फिर से इस क्षेत्र में पैर फैलाने लगा है। चीन व पाकिस्तान द्वारा तालिबान को समर्थन दिया जा रहा है। भारत के संदर्भ में समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है।

मुख्य शब्द

मध्य एशिया, भारत, आतंकवाद.

इतिहास में मध्य एशिया रेशम के मार्ग के व्यापारिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिध्द है। यहाँ अधिकांशतः खाना बदोश जातियों का प्रभाव रहा है। यह क्षेत्र उत्तर में रूस से दक्षिण में अफगानिस्तान तक और पूर्व में चीन से पश्चिम में कैस्पियल सागर तक फैला हुआ है। भूवेत्ताओं द्वारा मध्य एशिया की प्रत्येक परिभाषा में भूतपूर्व सोवियत संघ के पाँच देशों को भी उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान और ताकिकिस्तान हमेशा गिना जाता हैं।[1] शक्ति संचय के सामारिक युग में

मध्य एशिया को एशिया का मर्मस्थल कहना ज्यादा उचित होगा।

भारतीय सुरक्षा और सामारिक हित प्रबन्धन में मध्य एशिया काफी महत्वपूर्ण है। यहाँ पर तेल, गैस, यूरेनियम, सोना और अन्य खनिज सम्पदा का अथाह भण्डार है। ईरान और अफगानिस्तान एशिया का गेट वे है। पाकिस्तान बनने से पहले ईरान और अफगानिस्तान की सीमा भारत से मिलती थी। भारत विभाजन के बाद इन देशों के साथ भौतिक दूरी भले ही बढ़ गयी हो लेकिन भावनाओं का रिश्ता सदियों से है। अफगानिस्तान, भारत के लिए ही नहीं सम्पूर्ण मध्य एशिया के लिए प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण देश रहा है। अफगानिस्तान में 1980 में रूस के प्रवेश से यहाँ की स्थिति निरंतर बिगड़ती चली गई। अफगानिस्तान का अधिकांश समय कबीलों (तालिबान) से संघर्ष में ही गुजरा। अत्यधिक गरीबी का जीवन जी रहे, यहाँ के कबीले न तो शांति से कभी रहे है और न उन्होंने अपने पडोसियों को शंति से रहने दिया है।[2]

अस्सी के दशक में विकास लगभग ध्वस्त हो चुका था। संभ्रात परिवार के शिक्षित अफगानी परिवार विदेशों में बस चुके थे। पाकिस्तान ने रूस को मात देने के लिए कम, अपने हित साधनों के लिए ज्यादा, छात्रों की तालिबानी सेना की मदद से बचे हुए, निरक्षर, सरल और धार्मिक प्रवृत्ति के नागरिकों को कट्टरपंथी हिसंक मरजीवाड़ों में बदल डाला था।[3]

मध्य एशिया का यह क्षेत्र जुनूनी गुटों हथियारों तथा मादक द्रव्य विक्रेताओं का प्रिय स्थल रहा है। आज भी यहाँ हेरोइन तथा स्वाचालित हथियार सब्जी की तरह बिकते है।[4]

सुखे मेवों के लिए प्रसिध्द यह ठण्डा रेगिस्तानी क्षेत्र पश्चिमी देशों के लिए आज भी एक दुर्गम किला साबित हुआ है। 1979 में अफगानिस्तान पर सोवियत संघ ने अपने हितो के लिए आक्रमण किया था।[5]

1989 में लम्बे संघर्ष के बाद सोवियत सेना ने अफगानिस्तान से वापसी की। 1989 से 1992 तक अफगानिस्तान में स्थानीय सरकार व मुजाहिद्दीन के मध्य सत्ता को लेकर संघर्ष चलता रहा। अमेरिका व पाकिस्तान द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतू मुजाहिद्दीयों का समर्थन किया गया।[6] जिस कारण 1992 से 1994 तक अफगानिस्तान पर मुजाहिद्दीनों की सरकार कायम रही। इसी बीच स्थानीय मुस्लिम ताकतों में खीचतान के कारण कंधार में एक नए संगठन तालिबान का उदय हुआ। तालिबान ने 1994 में कंधार पर व 1996 में काबुल पर अधिकार कर लिया। इसी बीच ओसामा–बिन–लादेन और पाकिस्तान के बीच निकटता बढ़ती चली गई। और 1998 में तालिबान को बढ़ावा देने के लिए अल कायदा का गठन किया गया। 60 से अधिक देशों में तालिबान का संगठन कायम कर ओसामा को तालिबानी सेना का मुखिया नियुक्त किया गया। तालिबान ने नारा दिया कि वे इस्लाम धर्म की भावनाओं को ठेस पहुचाने वालो को सबक सिखाना और ठिकाने लगाना चाहते है।[7]

तालिबान शासन को पाकिस्तान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात ने मान्यता प्रदान की थी। इराक और लादेन की मित्रता के कारण पश्चिमी राष्ट्र उनके विरोधी हो गए। अमेरिका द्वारा तालिबान सरकार के विरूद्ध प्रतिबन्ध लगा दिये गए। 1999 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने प्रतिबंध समिति बनाते हुए अलकायदा और तालिबान को आतंकबादी संगठन घोषित करते हुए प्रतिबंध लगा दिए।[8] आखिरकार 11 सितम्बर 2001 का वह काला दिन आ गया जब दो यात्रियों से भरे हुए वायुयानों से अमेरिका पर आक्रमण किया गया। इस हमले में 3000 अमेरिकी लोग मरे गए। इस हमले के मुख्य आरोपी ओसामा बिन लादेन को अमेरिका द्वारा मांगे जाने पर तालिबान सरकार द्वारा उसे सौपने से इन्कार कर दिया गया।[9]

लादेन के कारण अफगानिस्तान पर अमेरिकी सेना ने आक्रमण कर दिया। दिसम्बर 2001 में अमेरिका ने तालिबान शासन को उखाड़ फेका। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा एक अंतरिम अफगान सरकार का गठन किया गया।[10]

2004 में अफगान प्रतिनिधियो की एक समिति ने अफगानिस्तान के लिए एक संविधान का निर्माण कर उसे अंगीकृत किया। अक्टूबर 2004 में इस संविधान के तहत सम्पन्न आम चुनाव में हामिद करजई पहले निर्वाचित राष्ट्रपति चुने जाते है। इसके पश्चात मुल्ला उमर के नेतृत्व में तालिबानी गुट ने पुनः संगठित होकर नई अफगान

सरकार और अमेरिकी सेना पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिये थे। तालिबान और अमरिकी सेना का यह संघर्ष 2011 तक जारी रहे अमेरिकी सेना द्वारा 2011 में पाकिस्तन में छुपे हुए ओसामा बिन लादेन को मार गिराया गया। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा द्वारा ओसामा–बिन–लादेन की मृत्यु के बाद अफगानिस्तान से अमेरिकी सैनिकों की वापसी की घोषणा की गई। अन्तर्राष्ट्रीय सेनाओं के हाथ से अफगान सेनाओं को कमान सौपनें के लिए विचार विमर्श हेतु जर्मनी के बॉन शहर में इसी बर्ष एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। अफगानिस्तान में वर्ष 2014–2015 में समपन्न विवादास्पद चुनाव परिणामों में अशरफ गनी को राष्ट्रपति चुना गया। 2015 में तालिबान प्रमुख मुल्ला उमर की मृत्यु की घोषणाा की गई। मुल्ला उमर का उत्तराधिकारी मुल्ला अख्तर मंसूर अमेरिकी सेना द्वारा ड्रोन से किए गए हमले में 2016 में मारा गया।[11]

इस्लामिक स्टेट में आये उफान ने पूरे विश्व का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है। ईरान तथा आस्थिरता से जूझते अफगानिस्तान और पाकिस्तान में दिन प्रतिदिन बदलते घटनाक्रम को प्रभावित करने की संभावना मध्य एशिया में मौजूद है। भारत ने इस क्षेत्र को अपनी दूरगामी योजना में महत्वपूर्ण स्थान देते हुये एक नयी पारी की शुरूआत की है। भारत ने आर्थिक और सुरक्षा चुनौतियों को ध्यान में रखते हुये सबसे महत्वपूर्ण तीन क्षेत्रों ऊर्जा, बाजार और आतंक निरोध पर मध्य एशिया में एक नये पृष्ठ का सृजन किया है। भारत थोड़े निवेश के साथ ही अपनी मौजूदगी दर्ज कराने के अतिरिक्त अपनी तकनीकी क्षमता का भी प्रदर्शन कर सकता है। भारत यदि ऐसा करने से चुकता है तो इसका लाभ चीन और पाकिस्तान को होगा। पाकिस्तान हमें अफगानिस्तान में उलझाव की स्थिति में रखने की रणनीति पर चल रहा है। ऐसे में भारत का यह दायित्व है कि वह मध्य एशिया में अधिक सामारिक गहराई हासिल करें। चीन ने इस क्षेत्र में वित्तीय सहायता से नये रेल और रोड नेट वर्क का जाल बिछाया हुआ है। इस क्षेत्र में चीन की नीतियों को ध्यान में रखते हुये सिंतबर 2013 की मध्य एशिया की यात्रा के दौरान चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने सामारिक और रणनीतिक मंशा के तहत न्यू सिल्क रूट की अपनी परिकल्पनाा 'वन वेल्ट वन रोड' की घोषणा की। ईरान के राष्ट्रपति खतामी 2003 के प्रारम्भ में भारत की यात्रा पर आये थे, तब उन्होंने औपचारिक रूप से भारत से मिलकर चाबहार बंदरगाह को विकसित करने की इच्छा जतायी थी। भारत ने अपनी वृहत्तर कूटनीति के तहत 2016 में ईराने के चाबहार बंदरगाह को विकासित करने के लिए एक ऐतिहासिक समझौता किया।[12] इससे मध्य एशिया तक हमारी पहुँच आसान बन जायेगी। भारत इस क्षेत्र में मल्टी माडल कोरीडोर का निर्माण करने की दिशा में भी प्रयासरत है।

भारत की इस दिशा में एक महत्वपूर्ण चुनौती ईरान और अमेरिका के बीच भू–राजनीतिक मतभेद दूर करने की है जो भारतीय कम्पनियों को ईरान में प्रभावी ढंग से कार्य करनें में बाधा डालता है। पाकिस्तान सदैव की भारत को उसके भू–भाग से अफगानिस्तान में प्रवेश देने के प्रति उदासीन रहा है। हाल के वर्षों में उसने न केवल भारत को अफगानिस्तान जानें पर पाबंदी लगायी बल्कि अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ लेते हुये भारत को क्षत विक्षत करने की हर संभव साजिश की है। पाकिस्तान की इस साजिश को नाकाम करने में एकमात्र सशक्त विकल्प के रूप में उभरा है– चाबहार बंदरगाह का विकास। ईरान ने चाबहार बंदरगाह से जाहेदान को जोड़ने वाला रोड़ बनाया तब चाबहार और अफगानिस्तान और वहाँ से मध्य एशिया तक पूरा रोड नेट वर्क आस्तित्व में आ गया। चाबहार ईरान का ऐसा बंदरगाह है जो ईरान के दक्षिण पूर्वी हिस्से और ओमान की खाड़ी में स्थित है, जिसकी सीधी समुद्र तक पहुँच है। ईरान की सीमा से अफगानिस्तान की हाइवे व्यवस्था तक भारत द्वारा 'जरांज–देसाराम' हाईवे निर्माण एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस हाईवे के निर्माण को रोकने में पाकिस्तान ने अपने आतंकी गुटों का सहारा लिया जिसमें हमारे इंजिनियारों एवं कार्य दलों की जानें गयीं लेकिन भारतीय निर्माण दल ने चट्टान की तरह डटकर जान की परवाह किये बिना इस कार्य को पूरा किया। इस परिवहन गलियारे के विकास से भारत को बिना किसी अवरोध के न केवल अफगानिस्तान बल्कि मध्य एशिया और उससे आगे यूरोप तक अपने सामानों के लिए बाजार उपलब्ध हो जायेगा। वैश्विक स्तर पर इसके दूरगामी परिणाम भविष्य में आर्थिक और सामारिक मोर्चे पर देखने को मिलेंगे।

बदली हुयी भू–राजनीतिक परिस्थितियों और विश्व भर में चलाये जा रहे आतंकवाद के खिलाफ बढ़ रहे गुस्से से पाकिस्तान का पक्ष कमजोर पड़ता जा रहा है। जिस अमेरिका ने सोवियत रूस के विरूध्द अफगानिस्तान की भूमि पर आतंकियों और जोहादियों को खड़ा किया था, वही अब उससे दूसरी तरह पेश आ रहा है। अमेरिका ने न केवल पाकिस्तान से तालिबान और हक्कानी नेटवर्क के खिलाफ और कठिन कार्रवाई की माँग की, वहीं यह भी कहा है कि अफगानिस्तान में अस्थिरता के लिए जिम्मेदार और अमेरिका के दुश्मन ये आतंकी संगठन पाकिस्तान में ही पनाह लिये हुये है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा तालिबान से वर्ष 2019–2020 में बातचीत करने की घोषणा की गई। तालिबान के साथ वार्ता में हुए समझौते के अनुसार वर्ष 2021 में अफगानिस्तान से सम्पूर्ण अमेरिकी सेना की वापसी पर सहमति बनी। तालिबान की ओर से इस समझौते पर मुल्ला अब्दुल गनी बरादर ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते में यह तय हुआ कि तालिबान को सम्पूर्ण आतंकवादी गतिविधियॉ बंद कर, एक अंतर–अफगान वार्ता में भाग लेना होगा। नव निर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने 31 अगस्त 2021 तक अफगानिस्तान से सम्पूर्ण अमेरिकी सैनिकों के हट जाने की घोषणा की। अफगानिस्तान से पीछे हटती अमेरिकी सेनाओं की कार्यवाही के बीच तालिबान ने 15 अगस्त 2021 को काबुल पर अधिकार कर लिया। 31 अगस्त 2021 की तारीख आते–आते लगभग सम्पूर्ण अफगानिस्तान पर तालिबान ने अपना कब्जा जमा लिया। जिससे अफगानिस्तान में अफरा–तफरी का माहौल कायम हुआ। अमेरिका के सहयोगी राष्ट्र अमेरिकी के द्वारा सेना वापसी के इस निर्णय से नाखुश नजर आए।

निष्कर्ष

अफगानिस्तान पर कब्जे के तीन हफ्ते बाद 7 सितंबर को तालिबान ने 33 सदस्यीय नए मंत्रिमंडल के नामों की घोषणा की। नई तालिबान सरकार में पाकिस्तान स्थित हक्कानी नेटवर्क की प्रमुखता से मौजूदगी ने भारत की चिंताओं को बढ़ा दिया है। मूलतः उत्तरी बजीरिस्तान के हक्कानियों का अलकायदा और पाकिस्तान के द्वीप स्टेट से गहरा रिश्ता है। जुलाई 2008 में अफगानिस्तान में भारतीय दूतावास पर आत्मघाती हमले के आरोपियों में से एक सिराजुद्दीन हक्कानी अब तालिबान की सरकार में गृहमंत्री हैं। तालिबान की वापसी भारत के लिए दोहरी चुनौती साबित हो रही है। अगस्त 2021 से पूर्व भारत का वास्ता अफगानिस्तान पर हुकूमत कर रही लोकतांत्रिक सरकारों से था। अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति हामिद करजई और अशरह गनी पाकिस्तान को दुश्मन की तरह देखते थे, और प्रति संतुलन के लिए भारत को बढ़ावा देते थे। भारत बीते दो दशकों में अफगानिस्तान की विकास परियोजनाओं पर 3 अरब डॉलर (22000 करोड़ रूपये) खर्च कर चुका है। भारत को अब न केवल नई ताकत से उठ खड़े हुए तालिबान और उसके साथ आए अनेक स्वछंद कट्टरपंथियों से, बल्कि जीत की खुशी से सराबोर पाकिस्तान से भी निपटना है, क्योंकि पाकिस्तान अब कश्मीर में अराजकता पैदा करने के लिए पूरी ताकत झोंकने का प्रयास करेगा। इसके विपरीत तालिबान ने कश्मीर को भारत और पाकिस्तान के मध्य दोतरफा विवाद बताया है। उन्होंने कहा है कि वे अल्पसंख्यकों को नुकसान नहीं पहुचाएगें और संकेत दिया हे कि वे चाहते है, कि भारत विकास के जो काम कर रहा है उन्हें जारी रखें। भारत को आंशका यह है कि कही पाकिस्तान तालिबान पर कश्मीर में आंतकी गुटों को फिर से राह देने के लिए दवाब न डाले। भारत के दो प्रबल शत्रु व पड़ोसियों ने तालिबान से नजदीकिया बढ़ाना प्रारम्भ कर दी है। भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह अफगानिस्तान में समावेशी सरकार के गठन पर जोर दे। भारत के लिए आवश्यक है कि वह अफगानिस्तान पर पाकिस्तान की पकड़ को घटाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ से लेकर अफगनिस्तान तक प्रयास करे।

संदर्भ सूची

1. सिंह अशोक कुमार, प्रतिरक्षा, *अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं अन्तर्राष्ट्रीय विधि,* प्रकाश बुक डिपो बरेली 2018 पृ. 146।
2. पाराशर परमानन्द, *टेरोरिज्म वर्ल्ड वाइड इण्डो यू. एस. पर्सपेक्टिस,* स्वरूप एण्ड संस नई दिल्ली 1998 पृ. 75।

3. पाण्डेय रामसूरत, *इस्लामिक बम का भारतीय विकल्प* 2004 पृ. 137।
4. वही पृ. 138।
5. रेड्डी एल.आर., *द वर्ल्ड ऑफ ग्लोबल टेरोरिज्म,* ए.पी.एच. पब्लिसिंग कॉर्पोरेशन नई दिल्ली 2002 पृ. 20।
6. राव एच.पी., *टेरोरिज्म बायोलेस एण्ड ह्यूमन डिस्ट्रक्शन,* अनमोन पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 1992 पृ. 82।
7. पाण्डेय रामसूरत, *इस्लामिक बम का भारतीय विकल्प* 2004 पृ. 139।
8. इण्डिया टुडे पत्रिका, 8 सितम्बर 2021 पृ. 29
9. वहीं
10. वहीं
11. वहीं पृ. 22।
12. सिंह अशोक कुमार, प्रतिरक्षा, *अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं अन्तर्राष्ट्रीय विधि,* प्रकाश बुक डिपो बरेली 2018 पृ. 148।

****